Transcript of Zoom Meeting at 5.00 pm on Wed May 13, 2026

This transcript is only partially corrected. It still has many machine-made errors. For example, the Hindi words लोकविद्या (lokavidya), बहुजन (Bahujan), स्वराज (Swaraj)... are rendered variously! But much of it is understandable. Request all to go through their own parts and send me corrections. The docx file is available in the shared Google Drive sub-folder 2026-05-13 in the shared folder Lokavidya Debates. – Girish

---

Preamble

Main

Girish Sahasrabudhe:

Oh. शुरू कर सकते हैं अविनाश आ गए... नरेश गांधी भी आ गए. चलिए नरेश नहीं आए हैं ठीक है मैंने एक कुछ अभी तक कुछ लेख आये हैं... आज अविनाश ने एक यह भेजा है, एक जो उन्होंने शुरू किया है, लिखना अभी पूरा नहीं हुआ है. उसको टेम्पलेट कह रहे हैं वह... बहुजन दर्शन पर और मैंने उसके साथ में सुनील जी का पुराना नोट जो था बहुजन दर्शन का उसको भी उसमें जोड दिया है. तो मैंने, एक फोल्डर गूगल का शेयर किया था आपने शायद सबने देखा होगा. व्हाट्सएप पर उसका मैंने लिंक भेजा था... दो-तीन दिन हो गए. और कल मैंने इस पर भी लिंक भेजा था मेल में. वह मैं आपको दिखाता हूं. यहां पर स्क्रीन पर तो कुछ अंदाजा आ जाएगा. Uh एक मिनट यह आप लोग देख पा रहे हैं, इसको यह गूगल ड्राइव का फोल्डर के फाइल है यह यह फोल्डर का नाम है नोट्स. फॉर विचार समिति और उसमें चार. नोट. जो है वह अंग्रेजी में आए थे क्रेश. और गांधी ने मिलकर लिखा हुआ एक एक मेरा था एक गांधी, का था और अविनाश का जो पहला नोट था वह Uh ये चार अंग्रेजी, में थे ओरिजिनल और तीन हिंदी में थे Uh एक चित्रा जी का जो, नोट आया था वो आज एक, अविनाश का आया है Uh पूरा नहीं है लेकिन, वह हिंदी में. है बहुजन. दर्शन पर और सुनील जी का एक जो मैंने इंक्लूड कर लिया इसमें. तो, अब, यह एच से जो है. वह सारे हिंदी के हैं. Uh तो इसमें तीन और छत्तीस साथ होने चाहिए. और एक कहां चला गया हिंदी के हैं. और यह वाले अंग्रेजी के हैं Go! Hello सुन पा रहे हैं. आप लोग

Sunil Sahasrabudhey:

साथ है. हिंदी

Girish Sahasrabudhe:

हां. हिंदी, के साथ है एक. तो तीन चार होने चाहिए एक शायद अभी तक नहीं. उसमें से तीन हिंदी के ओरिजनल यह एक हाँ. ओरिजिनल मतलब एक चित्रा जी का है अविनाश, का है और आपका अच्छा, आपका. इसमें अभी तक मैंने शायद अपलोड नहीं किया है.

jksuresh:

हिंदी, सुनील, बहुजन दर्शन

Sunil Sahasrabudhey:

कैसे पढ़ रहे हैं

jksuresh:

साथ है साथ ठीक है

Sunil Sahasrabudhey:

सब है.

Girish Sahasrabudhe:

किसका

jksuresh:

लोगों का है, जो आपने कहा अविनाश, का दो चित्रा, जी, का एक, गांधी का गिरीश, का एक कृष्ण गांधी का एक और सुनील का

Girish Sahasrabudhe:

नहीं नहीं. अविनाश का अविना हाँ ठीक, है ठीक, है वही, बता रहा हूं मैं, नहीं नहीं इसमें. अभी सुनील का अपलोड नहीं हुआ है. मैं भी कर देता हूं. उसको तो पूरी हो जाएगी. लिस्ट. एक मिनट रुक

Sunil Sahasrabudhey:

है, तो नीचे तीसरा नीचे, से तीसरा है

Avinash Jha:

दिखाई

Girish Sahasrabudhe:

आपका दिख रहा है, उसमें

Avinash Jha:

दिख रहा था

Girish Sahasrabudhe:

अच्छा एक मिनट, एक मिनट, थोड़ा, इधर

jksuresh:

आपका स्क्रीनशॉट में ही दिखता

Girish Sahasrabudhe:

एक मिनट, एक मिनट भी उसको ठीक कर देता हूं. यह तो अलग यह, आपका यह अपलोड नहीं, किया. है, यह कह रहा था, मैं अभी हो जाएगा. एक मिनट

Sunil Sahasrabudhey:

अपलोड की लिस्ट नहीं है

Girish Sahasrabudhe:

हो गया ठीक इसको शेयर करता हूं. नहीं. नहीं. वो ड्राइव में नहीं दिख रहा था दूसरी जगह पर दिख रहा था. Yeah अच्छा दिखाई दे रहा है यह ड्राइव का स्क्रीन? एक, दो, तीन,... और क्या हुआ अभी, भी नहीं. .. चार पाँच Yeah, yeah ऊपर यह सुनील जी वाला है, और यह अविनाश ने अभी भेजा था वह है... बहुजन दर्शन... यह एक टेम्पलेट किस्म का है कि बहुजन दर्शन किस तरह का होगा ऐसी कुछ व्याख्या है उसमें... और बाकी, के जो है, चित्राजी का ओरिजिनल नोट है हिंदी का, और बाकी जो हिंदी दिख रहे हैं, वो ट्रांसलेशन अंग्रेजी से ट्रांसलेशन से मैंने यह किया है कि वह जितने नोट आए हैं सबके हिंदी. वर्शन भी है वहां. पर और एक मराठी भी है... मेरा जो है मराठी में भी कर दिया यह सब जेमिनी के हैं. आप लोग इसको देखें तो ठीक होगा... यह जो फोल्डर है... यह फोल्डर इसमें से कोई भी फाइल आप लेकर के एडिट कर सकते हैं यह सिर्फ व्यू के लिए नहीं है... आप किसी भी फाइल को लेकर एडिट कर सकते हैं और सेव कर सकते हैं. But यह सारा एक साथ मटेरियल रहेगा. अभी इसमें सात चीजें हैं. यह तो एक बात हुई, जो मतलब यह आप लोगों के पास हमेशा रहेगा ये मटेरियल, क्योंकि शेयर्ड ड्राइव पर है.

अच्छा दूसरा यह है कि यह कुछ अलग अलग तरह के राइट-अप हैं... उसमें से दो जो है सीधे विद्या आश्रम क्या कर रहा है, इस पर बात करते हैं - क्या कार्यक्रम है, और किस तरह की सोच चल रही है, इस पर बात है. दो बहुजन दर्शन पर हैं... जो अविनाश जी ने आज भेजा है वह, और पुराना सुनील जी का. और एक जो है, अविनाश जी का, वह एकलव्य की कहानी है. मतलब जो नैरेटिव की बात शुरू हुई थी... उसमें एकलव्य की कहानी पर उन्होंने अपना कुछ मत प्रदर्शन किया हुआ है. उसका एक इंटरप्रिटेशन है.... मतलब कहानी का और कई चीजें पॉइंट-आउट करता है महाभारत के इसकी बहुजन की दृष्टि से कहिए, या जिसको नॉन-इंपीरियल कह सकते हैं, जो मतलब कौरव और पांडवों का जो है... वो राजाओं का भी यह इंपीरियल है, उसमें और एकलव्य का जो है, वह बहुजन का कहा जा सकता है. उसका एक इंटरप्रिटेशन है. और दो जो है, वह कुछ प्रोग्राम से, और आज की दुनिया से संबंध रखते हैं... जिसमें आज के दुनिया के बारे में ज्यादा बात है. गांधी का एक है. जिसमें आज क्या हो रहा है, इसका काफी वर्णन है... और क्या किया जाना चाहिए, इस पर कुछ सुझाव है. और कृष ने जो, भेजा है और गांधी ने उसमें तीन ठोस प्रस्ताव हैं... एक जीएसटी पर है एक, एसआईआर, पर है मतलब एसआईआर पर मतलब नागरिकता पर एक है और एक जीएसटी पर है और, एक तीसरा है जो मैं भूल रहा हूं... तीन सुझाव है, उसमें तो यह सीधा सीधा यह मेरे ख्याल में मतलब मैं जैसे समझ रहा हूं, उसको लोकविद्या जन आंदोलन इन कार्यक्रमों के बारे में सोच सके ऐसे प्रस्ताव हैं, जो विद्या आश्रम के व्यापक सोच के सुसंगत सुझाव है.

तो, इस तरह के कई किस्म के लेख आए हैं अब इनको लेकर के एक तो यह है कि यह अपने आप में एक एक... प्रयास होगा जिसमें कई दिशाओं से लोग विचार अपने प्रस्तुत करें, और एक साथ... मतलब, यह एक तरह से अभी तक जो हम लोग डिबेट करते आए हैं उसका एक प्रतिबिंब कहिए... इस तरह से होगा... अपनी अपनी सोच से लिखेंगे, लेकिन एक ही सोच के इर्द गिर्द होगा कुछ... जो व्यापक अर्थों में विद्याश्रम की सोच से सुसंगत कहा जा सकेगा जिन चीजों की हम बात करते हैं अभी तक तो, ऐसा, एक संच कहिए, उसको कलेक्शन कहिए, तैयार होगा. इसमें अभी कुछ चीजें और अपेक्षित हैं. सुरेश को भी एक भेजना है. उन्होंने कहा था कि वह काफी कुछ लिख चुके हैं. लेकिन अभी पूरा नहीं उसको किया है. वह हो जाएगा. कुछ और दिन में. नरेश भेजने वाले थे... एक वह जल्दी भेजें, उसको और एक लक्ष्मण प्रसाद भी भेजेंगे आपने भी कहा था, लक्ष्मण, आप एक भेजेंगे तो यह आ जाए तो फिर उसको एक साथ मिलाकर के और एक संच बनाया जा सकेगा, जिसमें इसको एक साथ रखने वाला कुछ लिखना होगा... मैं कोशिश करूंगा कि ज्ञान और राजनीति एक साथ देखने वाला एक नोट... जो कुछ मैंने लिखना शुरू किया था लेकिन वह पूरा नहीं हो पाया अभी.... और उसको भी थोड़ा समय भी लगेगा कुछ... लिखना होगा, वह लिखूंगा मैं... वह हो सकता है. इसमें दूसरा एक... लेख के तौर पर आ जाए... लेकिन इन सबको

जोड़ने वाला एक लिखना होगा. जो.... जिसको मैं लिखता रहूंगा... मतलब जैसे लेख आते हैं... और फिर उस पर कुछ विचार हो जाएगा एक साथ. तो यह बात है आप लोगों ने शायद यह देखे होंगे लेख.

तो किसी पर... किसी को इस योजना पर और सुझाव कुछ देने हैं... क्योंकि यह एक तो इनका उपयोग विचार. समिति के सदस्यों या संभावित सदस्य जो है उनको... उनके साथ बातचीत करने के लिए भी यह काम आएगा... इसको प्रस्तुत किया जाएगा उनके सामने... Uh जिसमें इसमें जाकर के वो बाकी वेबसाइट भी देखेंगे कुछ और चीजें भी देखेंगे... ऐसा एक्सपेक्टेड है. लेकिन वे यह करें, इससे पहले यह चीज उनके सामने होगी, और एक साथ होगी, एक साथ बांध करके, इसको भेजा जाएगा... ऐसा ऐसा ऐसी सोच है. तो, एक तो यह चीज है, जिसके बारे में आप लोग अपने विचार साझा करें... और दूसरा और क्या इसमें हो सकता है... और तीसरी एक चीज यह थी कि हम लोगों ने एक सूची बनाई थी संभावित सदस्यों की अब इसको सिर्फ भेज देने से तो यह होगा नहीं तो यह भी कुछ योजना होनी चाहिए कि जिन लोगों ने यह नाम प्रस्तावित किए थे वह उन लोगों के साथ बातचीत करें सीधी और विचार समिति के बारे में बातचीत करें. उनको बताएं. और इस दृष्टि से देखें उसको कि उनको आमंत्रित करना है विचार समिति में. उन लोगों से बात करें जो इसमें आने की संभावना है. इन लेखों को पढकर और आपकी बातचीत के साथ में. और यह दूसरा काम है... उसका इस संच, का जो बना है यह बन रहा है लेखों का So यह है. मुझे शुरू में इतना ही कहना है. लोग इस पर कहें, बात कहें अपनी... इसको देख पाए हैं इन लेखों को नहीं देख पाए... मगर इसके बारे में भी कि इसमें क्या और हो सकता है. गांधी? आपसे शुरुआत करें, गांधी?

Krishna Gandhi:

अ. तो हम. लोगों ने. जहां तक यह पृष्ठभूमि यह थी कि हम लोग विचार समिति को एक्सपेंड करना चाहते हैं. सुनाई दे रहा है. क्या

Girish Sahasrabudhe:

There. I... recording बंद था. फिर ठीक है, वो मैं कर लूंगा आप बोलिए...

Krishna Gandhi:

हाँ तो, फिर, यह, था कि मूल सोच यह थी कि हम लोग विचार समिति में, और लोगों को शामिल करना चाहते हैं और उसके लिए, एक मतलब संदर्भ, या एक उनसे संपर्क करने के लिए एक हमारे पास एक डॉक्यूमेंट होना चाहिए, या कुछ विचार होना चाहिए कि हम लोग क्या सोचते हैं. और आगे कैसे बढ़ना चाहते हैं तो सब बताते हुए, कलेक्शन ऑफ आर्टिकल हमारे पास रहेंगे. तो वह उनके साथ हम शेयर करेंगे और उनसे कहेंगे कि आप इस प्रकार के डिस्कशन में शामिल होंगे, तो हम लोग ग्रेटफुल. रहेंगे थैंकफुल रहेंगे इस प्रकार. का एक सोच था तो अब हम लोग उसमें काफी मेरे विचार से लेख और भी कुछ इसमें जुड़े जुड़ जाएंगे जब तक यह सब भेजे जाएंगे अ. तो मेरा पहले भी यही सुझाव था. एक ऑनलाइन मीटिंग का, एक एक ये हो सकता है प्रोग्राम लेकिन ज्यादा अच्छा एक इंटरेक्शन ऑनलाइन से ज्यादा पेस टू फेस होता है तो हमें उस फेस टू फेस मीटिंग कैसे कहाँ, करेंगे, इसके बारे में सोचना चाहिए. ऐसा मुझे लगता है और उसी के ऊपर अब, आगे हम लोगों को कंसन्ट्रेट करना चाहिए, तो कैसे हम विचार समिति के संभावित सदस्यों से कैसे संपर्क करेंगे का क्या तरीका होगा और फिर जो उन सब लोगों कैसे एक जगह पर सबको एकत्र होकर के दो, या तीन दिन का, एक मतलब. बैठक जैसा हम लोग करें और उसमें मैं समझता हूँ कि बहुत बड़ी कोई बैठक करना. यानी कि बीस पच्चीस लोगों से ज्यादा कोई चार. तक की बात होती नहीं है तो हमें बहुत ज्यादा संख्या पर कंसन्ट्रेट करने की जरूरत नहीं है. के ज्यादा लोग आए हमें तो कम से कम पांच दस लोग. नए. हमारे दस लोग हमारे जुड़ जाए हमारे ग्रुप में डिस्कशन, में तो वह बहुत अच्छा एक सक्सेस होगा ऐसे में सफल होगा. हम लोग अपने प्रयास में ऐसा मैं मानता हू तो करीब पच्चीस तीस लोग एक जगह कहा मिल सकता है कैसे मिल सकते है उसका क्या प्रोसेस रहेगा इस बारे में हमें सोचना चाहिए. ऐसे सोचता हूँ, यही मेरी मुझे कहना है, और लेखों के बारे में डिस्कशन से अभी तो होता रहेगा. और पहले, वो तो हम लोग आपस में, जो डिस्कशन से ज्यादा जो संभावित सदस्यों से डिस्कशन होगा, उसके उसके लिए एक संदर्भ ग्रंथ, टाइप हम लोग इसको यूज करेंगे. तो अपने डिस्कशन और

उनके साथ जो डिस्कशन होंगे, तो उसमें से ज्यादा क्लेरिफाई होते जाएंगे. जो भी हम लोगों की बातें हैं इसमें जो लिखे हैं तो लेखों पर डिस्कशन इस नॉट मतलब वो अर्जेंट नहीं है. वह तो होता रहेगा. और फेस टू फेस मीटिंग में. भी हम लोग ज्यादा उसमें समय दे सकते हैं तो ऐसे क्या हो सकता है मीटिंग फेस टू फेस है इसी पर. हम लोगों को कंसन्ट्रेट करना चाहिए ऐसे में. मेरा सुझाव बस इतना ही मेरा कहना...

Girish Sahasrabudhe:

कृष्?

Krishnarajulu:

विचार, समिति में ऐसे लोगों को भी इंक्लूड करना है जो बहुजन, समाज, संवाद में वो लोग हो सकता है कि वो लोग अभी भी वो अपने लोकल स्थानों में संगठनों में एक बहस चलाते होंगे. मगर और ये दो तीन, मुद्दे के बारे में, जो लिखा है वो एक, तो एएसआईआर के बारे में दूसरा तो एमएसपी के बारे में तीसरा तो जीएसटी के तो इन मुद्दों पर आम लोगों में बहुत बहस हुआ है और इन तीनों से थोड़ा सेंसिटिव जो कहते हैं ऐसा तो, सीधा, एक आपके लिए वो राजनीतिक, पॉलिटिकल, इशू और एमएसपी तो जो हम लोग ने पहले उठाया. सबकी आय पक्की हो इसका मतलब जो बहुजन का जीवनयापन है. उससे एक पक्की और एक न्यायपूर्ण आय मिले हम कहते हैं और इस बहस में, हम स्थानीय पंचायत में इंक्लूड करें कि एमएसपी का जो फिक्सेशन होगा जुताई होगा लोकल जो जहां पैदावार होती है, जहां प्रोडक्शन होती है. छोटे मोटे वह तय करें वह, समाज तय करें कि उसका बिक्री किस दाम पर होगी यह एक किस्म का एक इकोनॉमिक डिमांड के है. मगर एक The power to डिबेट कि हमारी काम के लिए बाजी आय क्या है जबकि सरकार विभिन्न जो भी, सरकारी क्षेत्र में जो भी काम होती है सरकारी नौकरों को वोट डिसाइड करते हैं कि कितना देन आए, कितना लाई देना है कितना लॉन्च दे रहा है वगैरह, वगैरह और उसमें बहुजन समाज, की जो मुद्दा है बहस में तो आती ही नहीं मगर बहुजन समाज अपने इस मुद्दों पर अपनी बात सामने ला सकते वो एमएसपी तय करने में यह बहुजन समाज का विचार इस. विषय पर वो सामने आएगा कि कौन सा मुद्दे इंपॉर्टेंट है और ये लोकल एरिया में डिसाइड या नाकी की जो, भी दाल पैदा करते हैं विभिन्न. क्षेत्रों में सबका एक ही दाम कमेटी तय करें अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग प्रॉब्लम्स हो सकती है और वो स्थानीय क्षेत्र में अगर इस पर बहस होगी, तो और इसके निर्णय तक पहुंच जाएंगे. तो, इसलिए बहुजन संवाद, पंचायतों में यह मुद्दे के के द्वारा हम बहुजन, विचार बहुजन दर्शन के लिए वो सामने आने के लिए प्रयास जीएसटी के बारे में आप टैक्स लगा रहे सब चीजों पर टैक्स और वो टैक्स वसूल करते हैं और बहुजन समाज के लोग बहुत कंट्रीब्यूट कर रहे हैं. और जीएसटी द्वारा सेंट्रल, रेवेन्यू, सेंट्रल, स्टेट मगर जो है अपने उत्पादन पर जो टैक्स वो ले रहे हैं, वो ले जा रहे हैं ना कि किसी लोकल क्षेत्र में उसका कुछ हिस्सा भी इनको प्राप्त हो. लोकल पंचायत को लोकल बॉडी को Anyway हम इसलिए उठाए कि ये चर्चा में है और इससे बहुजन, विचार सामने आएगा अगर यह लोकल पंचायत में मुद्दों पर डिस्कशन होगी तो विचार, समिति में हो सकता है, कि जो मूवमेंट से. जो लोग को बुलाना चाहते हैं बहुजन समाज मूल रूप से विचार, समिति में इन बातों पर अपनी दृष्टि सामने लाए तो इससे बहुत स्पेसिफिक थी मुझे. और बहुत सारे हो सकते हैं महिलाओं के ये मुद्दे पर बहुत चर्चा हो रही है और विभिन्न जगहों में विभिन्न विषयों पर चर्चा जैसे एंट्री में ये. वो जो भी है जो भी डिस्क्रिमिनेशन होता है Even ये जो भेज दे रहे हैं हर एक किस्म का काम Even जो काम में होती है खेतिहर, मजदूर औरतों को कम मिलती है मर्दों को ज्यादा मिलती है. यह समानता क्यों है और बहुजन समाज का दृष्टि. इस पर क्या है विचार, समिति में इस पर डेरे के तो उससे ही इस चर्चा से मैं उम्मीद करता हूं कि बहुजन दर्शन के बहुत सारे मुद्दे स्पष्ट और सामने आएगा इसलिए यह डिस्कशन के लिए और इसको हम ऐसे लोगों को भेजें और इनवाइट करें कि विचार. समिति में यह आप तय करें कि वो लोग ऐसे लोग परमानेंटली विचार समिति में हो सकते हैं Yeah जब चाहिए. हम उनको बुला सकते हैं. उन मुद्दों को डिस्कस करने के लिए कम से, कम यह सिर्फ एक लॉजिकल लिया ऐसा लाइव टॉपिक क्या क्या आपका क्या आधार है मैं इस देश का वासी हूं और ये लोग कहते हैं कि आप इसको प्रूफ करे. कौन है, ये, पूछने वाले लोकल वाले सब जानते हैं कि कौन रहने वाले हैं. क्या है. उनके परदादे सब कहाँ रहते थे, क्या करते थे, सब कुछ पता लोकल वालों के पास जो इंफॉर्मेशन है वो कहीं स्टेट गवर्नमेंट के साथ इलेक्शन कमी

के पास नहीं है. उसकी सबका तो समाज जो बना है. बहुजन समाज इन सब लोगों से बना है, और यह लोग जानते हैं कि कौन है. बहुत दिन समाज का सदस्य जो है और कौन नहीं ये. कभी कुछ बता दिया और ये बोल दिया कि आपका अब सिटिजन नहीं है. आपका कोई हक नहीं है. इधर यह गलत है हाँ. यह, है कि बहुत सारे लोग इधर से उधर गए हैं आए. हैं भारत देश में सदियों से लोग आ रहे हैं, बाहर तो ठीक है ऐसे हैं और कुछ को आप सिटिजनशिप देने के लिए तैयार हैं. कुछ रोक नहीं देना चाहते यह सब क्या है कौन डिसाइड करेगा जो सीख समाज, अफगानिस्तान से भागकर आए हैं. यहां के लोकल सिख समाज को शामिल कर देगा. अपने समाज में क्या है क्या प्रॉब्लम आप कौन है कि केके हम हमारे पास ही हक है. ये. कद इस. किस्म के मुद्दे को तमिलनाडु में बहुत सारे लोग तमिल. भाषा बोलने वाले श्रीलंका से तमिलनाडु आए हैं और इधर से उधर गए शादियां. बहुत होती है In fact

Girish Sahasrabudhe:

कृष् ...

Krishnarajulu:

And just one minute. यह तमिलनाडु का उनका बीवी है वो. श्रीलंकन origin है तो आप क्या कहेंगे Anyway, यह सब मुद्दे डिस्कस करना चाहिए. और विचार समिति में ऐसे लोगों को भी इनवाइट करना है, जो इन मुद्दों से बहुत अवगत है और वो बहुजन, विचार ला. सकते हैं डिस्कशन...

Girish Sahasrabudhe:

नहीं, मैं यह कह रहा था कि आपने जो इसमें तीन सुझाव दिए हैं वो स्थानीयता की बात जो... पहल... स्थानीयता की पहल की जो बात है उसमें नए आयाम जोड़ रहे हैं. इसमें तो कोई संदेह नहीं... और यह बातचीत तो होनी चाहिए. विचार समिति में तो होनी ही चाहिए. सुझाव के तौर पर भी होनी चाहिए. मांग के तौर पर भी और स्थानीयता की बात के इर्द गिर्द उसमें बात होनी चाहिए... यह तो निश्चित बात है ये. सारे लेख जो है यह विचार समिति में चर्चा के लिए उपयुक्त लेख बन रहे हैं. सब... सभी तमाम... चीजें आएंगी. नहीं... मैं कह रहा था कि आप इस पर अपना विचार बताएं कि इसको साथ करके एक साथ करके और पूरे एक कलेक्शन के साथ विचार समिति के जो सदस्य हो सकते हैं, उनके साथ बात करने का जो सुझाव और व्यक्तिगत तौर पर बात करने का सुझाव... यह क्या आपको ठीक लगता है... और कब तक यह कर लेना चाहिए... मतलब इसको? दूसरी बात यह थी - जो गांधी सजेस्ट कर रहे हैं - की फेस-टू-फेस मीटिंग की सबके साथ... तो इसके बारे में भी अपने मत दें.. आप भी दें.. और बाकी लोगों से भी यह रिक्वेस्ट है. अविनाश आप?

Avinash Jha:

विचार समिति के लिए नाम है. जो मैं सुझाना चाहता हूं. एक बेला भाटिया है जो आजकल दस पन्द्रह सालों से बस्तर में दांतेवाड़ा में रह रही है. आजकल, वो वहां पे प्रैक्टिस करती है, लॉ, प्रैक्टिस करती है और वह वहीं तो लोगों के पकडे गए हैं. यह वह इस तरह की सारे cases उन्होंने पहले एकेडमिक में थी, सीएसडीएस में भी थी, और पीएचडी. वगैरह की थी, बाहर से पीएचडी की थी. लेकिन पन्द्रह साल दस पन्द्रह साल पहले छोड दिया. उन्होंने सीएसडीएस की नौकरी और चली गई. वहां पर रहती है. तो उनसे मैं बात कर सकता हूं. उनको शामिल किया जा सकता है. दूसरी व्यक्ति वो है. वह मैं ज्यादा, शोर नहीं हूं. सुनील जी वगैरह, जानते, हैं अनन्या. वाजपेयी. वह अकादमिक दुनिया में पूरी तरह से अगर अकादमिक दुनिया से कोई इस तरह का चाहिए, को रख सकते हैं. नहीं, तो, लेकिन मेरा भाटिया को तो जरूर करना चाहिए दूसरा मुझे लगता. है, वह फेस टू फेस मीटिंग तो अच्छी बात है विचार. समिति के कई लोग बुलाया जाए लेकिन वह काफी मुश्किल क्योंकि आप सारे लोगों को एक साथ एकत्रित करना पहले, वो हम विचार समिति के लोगों से Is she दूसरे ढंग से ऑनलाइन ढंग से कुछ मतलब एक विचार का एक सिलसिला पहले शुरू करने तो, फिर उस तरह की मीटिंग को करने की सोच सकते हैं Okay मुझे लगता है, पहले तो एक एक करके या दो, एक नहीं, तो दो लोगों से बात करनी पड़ेगी. ना. हम, लोगों को एक साथ पता.

नहीं, एक साथ ज्यादा लोग विचार समिति के ज्यादा लोगों को बुलाकर तो विस्तार में फिर बात नहीं हो पाएगी एक, दो हजार से ज्यादा तीन व्यक्ति, से एक साथ बात हो सकती है. और और मैंने जो लिखा है, एकलव्य, उस पर लिखने के बाद, मुझे पता चला है कि बाद में भी एकल का आता है. मेंशन महाभारत में और दो, तीन जगह. मैंने देखा नहीं है, लेकिन रेफरेंस देखा है कि ऐसा एक तो मतलब युधिष्ठिर के राज यज्ञ के दौरान सहदेव जाते हैं. कई अन्य जगहों पर, तो एकलव्य का जो है, जगह है जो किंगडम है, वहां भी जाते हैं. और कुछ साइड लड़ाई भी होती है. उसको हरा भी देखते हैं उसमें. लेकिन एकलव्य का नाम डायरेक्टली नहीं है. लेकिन उसी के जमाने का है. बाद में अर्जुन जाते हैं. एक लंबे का बेटा है. उसको करा देते हैं और उसको मार भी देते हैं. फिर कृष्ण का भी है कि कृष्ण कहीं पर मार दिया. यह सब मुझे देखना है. अभी चेक करना है महाभारत. में क्या लिखा है दूसरी बात है कि जो निषाद अगर हम देखना शुरू करते हैं टाइगर, विकीपीडिया, का के लिए लेते हैं तो बहुत ही विस्तृत संदर्भ है, पूरे बहुत बहुत जगहों पर, बहुत चीजों में अलग अलग जियोग्राफिकल रीजंस में निषाद मतलब वैदिक समय से लेकर और बाद तक मतलब बहुत फैला हुआ है. यह निषाद यहां पर निषाद वहां पर रामायण, में तो है निषाद, निशान है जो नाव चलाने वाले हैं और Um Judy On पकड़ने वाले भी होते हैं और मछली बांटने वाले भी होते हैं. कथा सरित सागर में भी है निषाद. वह. कहीं दूर किसी द्वीप में उनका अपना यह है. किंगडम है, जहां पर एक व्यक्ति क्या तो नाम है दूसरा, जो खोज रहा है एक स्वर्ण गोल्डन सिटी को वहां पर हो जाता है. तो यह भी यह निषाद का एक इंटरेस्टिंग है, थोड़ा I'd love ऐतिहासिक फिर उसका क्या It's, not मतलब आपके कौन है निशाद किसको कहा गया है निशाद क्या वो कोई एक लोग हैं, या वह बहुत लोग हैं. बहुत अलग अलग तरह के अलग अलग तरह के लोग हैं और वो किस तरह के लोग हैं, और उनका क्या संबंध है मतलब जब आते हैं मेनस्ट्रीम सोसाइटी में और जब अपनी जगह पर रहते हैं और आते हैं, तो बहुत पुराना रेफरेंस है निरुक्त में याश, में जो, बहुत ही सबसे पुराना ग्रंथ है इंडियन प्रोड्यूशन में मतलब सबसे पुराने ग्रंथों में एक है उसमें है कि पंचजन करके मतलब जो चार जो वर्ण है मतलब, ये, पांचवें लोग हैं उसके उसके बाहर के लोग पंचजन का रेफरेंस और भी एक नाट्यशास्त्र में मैंने सुना, था पहले वह. आता है तो वहां पर पंचजन पंचजनों को कहा गया है कि वह नाट्यशास्त्र रेफरेंस नवज्योति भी बात करता वह है कि वह घुमंतू लोग हैं. और आर्टिस्टिक लोग हैं, जो कि गाना, गाते, हैं रचते हैं और जो घूमते रहते हैं. इस तरह के लोग लेकिन उसमें निषाद का जिक्र नहीं आया था लेकिन यहां जो में जो है, वह उसमें यह निषाद के संबंध में उसको पंचजन कहा गया. तो कहीं क्या यह वही लोग हैं. जो अपनी अपनी जगहों पर रहते हैं, लेकिन जब यह इस सोसाइटी में आते हैं You make imperial space बन जाते हैं, और एक आर्टिस्टिक ऑक्यूपेशन ले लेते हैं लेकिन यह Speculation लेकिन यह अपने आप सोचने की बात इसको और देखने की बात है कि निशाद कौन थे. क्या है और बस अभी बस इतना ही है.

Girish Sahasrabudhe:

सुरेश?

jksuresh:

हमें बहुत ज्यादा कहने की नहीं है. Uh हमारे ग्रैंडसन कम Uh माता जी पिताजी नहीं है उसका देखभाल करते एक. लड़की के साथ So I don't have any time, actually एक और हफ्ते के लिए और हमको यह बुद्धेजी का चित्रा, जी का और गांधी and कृष्णराजुलू ... I have not been able to read पढ़ने का भी बहुत समय नहीं मिला है. हो सकता है तो मंगलवार को हम चले जाएंगे. वहां जाकर छोड़कर आएंगे. उसके बाद, शायद एक आठ दस दिन में पढकर, उसके साथ हमारा जो पेंडिंग है वो राइटअप थोड़ा आधा हुआ है लेकिन आगे बढ नहीं पा रहे हैं... वो खत्म करके उसको भेजेंगे. और वही है, परिस्थिति अब तक, वही है तो हमें बहुत ज्यादा समय अब तक पता नहीं बिता नहीं पाए इसके बारे में तो हो जाएगा, अभी आठ दस दिन में हमारा लेख रेडी हो जाएगा और That's it from my side

Girish Sahasrabudhe:

और इसको लेकर आगे चला जाए, कैसे इसके बारे...?

jksuresh:

हां. हमें, ब्रॉडली अविनाश जो, कहते हैं वह सच... हमें लगता है कि वह ठीक है... लोगों को एक जगह पर हमें एक मीटिंग करना थोड़ा मुश्किल होगा लेकिन उसका पर्याय एक व्यवस्था से किया जा सकता है कि जो जो लोग यह जूम पर आ सकते हैं... आजकल तो काफी कुछ कॉन्फ्रेंस भी जूम पर चले चलाया जाता है... हो सकता है, और उनमें काफी इंटरेस्ट है तो यह किया जा सकता है नॉर्मल सेमिनार, कॉन्फ्रेंस लेकिन इसमें काफी, कुछ इंटरैक्टिव यह लाएंगे तो... With a position being Um स्पेसिफाइड, पोजिशन पेपर... जो वाराणसी में होंगे राइट प्लेस फॉर मीटिंग Because the first time जब यह विचार समिति जो है उसका पहचान वाराणसी से होना चाहिए... तो, इसीलिए अच्छा है कि वहां पर यह मीटिंग हो और जो लोग नहीं डायरेक्टली आ सके उनको तो शायद जूम पर यह किया जा सकता है और एक और एक्सप्लोरेशन किया जा सकता है कि यदि पन्द्रह बीस लोग या पच्चीस लोग हमारे लोग वाराणसी में होंगे और दस पंद्रह बीस लोग बाहर से होंगे एक बड़ा स्क्रीन लगाकर, हमारे आश्रम में कुछ किराए पर दो तीन चार दिन हम. ले सकते हैं वहीं, पर भी किया जा सकता है सब लोगों को पब्लिक एड्रेस सिस्टम से सुनाई भी ठीक से नहीं हो... ठीक से होगा. तो शायद ऐसा व्यवस्था किया जा सकता है. So I think it's not a bad idea. अविनाश से बहुत मुश्किल होगा. सब लोगों को एकत्र करने के लिए But this could be an exploratory एक मीटिंग हो लेकिन, उसके पहले जो पिछली बार इसके बारे में थोड़ा सा डिस्कशन हुआ था उसके ऊपर आपका टेंशन करना चाहूंगा कि सब लोग नॉट ओनली यह. सब पढ़ने के अपना भी एक पोजिशन पेपर या तो पेज का एक पेज का प्रतिक्रिया रूप में उनका टिप्पणी या उनका नोट्स जो है वो भी, शायद प्रतिक्रिया के रूप में देना चाहिए हमें लगता है, वह मानना चाहिए हम, उनसे ताकि वह We know, the degree of involvement they have, and डिग्री ऑफ इंटरेक्टिव मीटिंग Can be, in some sense रिक्रेस्टिंग अंडरस्टैंडिंग आफ्टर As important प्रॉब्लम को शायद ये दोनों हमें लगा कि इसके बारे में थोड़ा चिंता किया जा सके

Girish Sahasrabudhe:

Okay... Thank You चित्रा जी म्यूटेड है...

Chitra Sahasrabudhey:

मैंने जो अपना नोट लिखा है वो, मुख्य रूप से हम लोग क्या कर रहे हैं और दुनिया को कैसे देख रहे हैं लोकविद्या, दृष्टिकोण लोकप्रियता, दर्शन दृष्टिकोण से जो, कार्य, हो रहे हैं उनके सामने क्या चुनौतियां हैं इस पर फोकस किया था और यह कोशिश की थी कि संवाद की क्यों जरूरत है. ज्यादा और विचार समिति के सामने इस बात को प्रमुखता से लाना है कि संवाद की कमी विविध धाराओं के बीच में विविध अनुभवों के बीच में होना बहुत जरूरी हो गया है. और विचार समिति का गठन इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि ज्ञान की विविध धाराओं से एक समृद्ध एक नहीं मतलब एक समृद्ध विचार बन सके. लोकहितकारी तो, एक तो यह बात थी. दूसरी कार्यक्रम के रूप में, जो बात कृष्ण राजू ने कही है अ. वो अ. बहुत उपयोगी और वाराणसी ज्ञान पंचायत के मार्फत इस वर्ष के लिए जो, कार्यक्रम बने हैं और पिछले, दो तीन वर्षों में, जो कार्य, हुए इसी दिशा में हुई फजलुर रहमान ने बनारस के ज्यादातर मुस्लिम इलाकों में शहर जब यह मुद्दा उठा था तो बहुत घूम घूम कर काम किया था और यह बात रखी थी. कि एक वार्ड में लिस्ट, बनती है तो उनकी एक समिति होनी चाहिए. क्योंकि वही जानते हैं कि कौन है. वोटर हमारे वार्ड में कौन नहीं तो यह बात वाराणसी ज्ञान पंचायत से भी चलाई थी इसको और अधिक संगठित करने की कोशिश कर रहे हैं उसी तरह, से ये जो बहुजन स्वराज पंचायत की ऑनलाइन बैठकें हो रही है उसमें ये विचार आया कि इस बार की जो बैठक है पंद्रह मई की उसमें कूड़े के निस्तारण के उपकरण कवि के विषय को रखा है. आज के हिंदू में एक लेख आया है. अंग्रेजी अखबार में इसी पर है कि किस तरह से कूड़े का निस्तारण की व्यवस्था वार्ड स्तर पर Uh किसी एक विचार, लोगों की भागीदारी और लोगों के ज्ञान की भागीदारी से के बिना संभव नहीं है. हम लोग जब बात कर रहे थे, इस विषय पर चर्चा करने का तो इसी बात को सामने लाने की कोशिश की थी और विश्वविद्यालय विद्या और विद्या के पीछे टकराहट और सहयोग के बिंदु पहचानने की कोशिश की तो मुझे लगता है कि इसमें यह जीएसटी और इसका एसआईआर का और इसका

Abhijit Mitra:

एमएसपी एमएसपी एमएसपी, जीएसटी हां

Chitra Sahasrabudhey:

मुद्दा

Abhijit Mitra:

एमएसपी

Chitra Sahasrabudhey:

Um ये मुद्दे लाने चाहिए हमको भविष्य में. और इनके ऊपर एक चर्चा चलाई जानी चाहिए विचार समिति में ऐसे लोग होंगे, तो इस बात को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी. निश्चित रूप से सुरेश ने, जो प्रस्ताव दिया है कि एक मीटिंग होनी चाहिए विचार समिति. के लिए प्रत्यक्ष रूप से बनारस में की जाए. तो, अच्छा है, ऐसा हम समझते हैं. और ये की जा सकती है बनारस बहुत मतलब नए संदेश का एक रहा. है स्थान रहा है तो ये किया जाए इस पर. सोचा जाना चाहिए But

Girish Sahasrabudhe:

लक्ष्मण?

Lakshman Prasad:

बहुजन आख्यान बनाने के लिए ये इसका प्रयास जारी है. अभी तक मैं बहुत नहीं लिख पाया हूं, थोड़ा, लिखा हूं लेकिन इस दिशा में कार्य कर रहा हूं. इधर करीब पिछली मीटिंग जब, लगभग पंद्रह अठारा दिन पहले हुई थी उसके बाद से मेरी व्यस्तता काफी बढ़ी तो इसलिए मैं लिख नहीं पाया. लेकिन लिख रहा हूं और कई लेख मैंने पढ़े भी हैं तो कुछ एक उससे आलोक मिलता है, प्रकाश मिलता है और यह प्रयास होगा कि अगली मीटिंग के काफी पहले या एक सप्ताह दस दिन के अंदर मैं अपना लेख भेज दूं Uh दूसरी बात, जो बातें हो रही है के ऑनलाइन या ऑफलाइन विचार समिति की मीटिंग हो जिस भी रूप में हो तो, ये, विस्तार के लिए बहुत जरूरी है आगे और लोग जुड़े, और यह जो बहुत ही गंभीर मुद्दे हैं बहुजन खासतौर से बहुजन आख्यान जो बन रहा है. इसमें सारी बातें, जो आ रही है और लोगों तक पहुंचे इसके लिए और लोगों को जोड़ना चाहिए. तो, यह एक स्वागत योग्य कदम है सभी लोगों के प्रयास से होगा उद्या का कुछ मुझे आज नहीं करना है. कहना है अभी मैं चिंतन की प्रक्रिया में हूं आगे फिर मैं बात रखूं.

Girish Sahasrabudhe:

जी! जी! धन्यवाद अभिजीत

Abhijit Mitra:

हाँ. मेरा यह, कहना है जितना, मुझे समझ में आता है हमें चित्रा जी का जो, समाप है और कुछ हद तक. तुम्हारे इनकंप्लीट वाला जो हिस्सा है वह हमको लगा कि शुरुआती तौर पर लोगों से कांटेक्ट करने के लिए वह एक बैकग्राउंड प्रदान करती है और इस पर जोर देती है कि हम लोगों का. चिंतन का बैकग्राउंड तो आ गया पूरा बैकग्राउंड में संवाद की जरूरत है और उस संवाद को आगे बढानी है इस बात का बात को लेकर लोगों से संपर्क करनी है और बहुत ज्यादा अपने तौर पर. कार्यक्रम वगैरह के बारे में इसी दौर में न बताकर In इस दिशा में उनका क्या सोच है. उनका जो वह कार्यक्रम कार्य में जुटे हैं, उसमें से किस किस किस्म के मुद्दे आते हैं, और क्या आ रहा है, इसका एक फीडबैक लेने के आधार पर लोगों को शामिल करना है यह हमको लगता है कि यह सारा चीज जिसके ऊपर बहुत सारी चीज है तो, उसके ऊपर जब डिस्कशन होगी. तो

सिलसिलेवार तरीके से या जैसे भी हो यह जो विचार समिति, या सेमी विचार समिति कहो. तो, यह डिस्कशन में एक एक मुद्दा या कुछ कुछ मुद्दों को साथ में लेकर उसके ऊपर फिर गहन बात हो सकती है सघन. बात हो सकती है लेकिन, शुरुआती में अगर, लोगों से विचार आमंत्रित करना है. उनका क्या सोच है उसके लिए एक बेसिक बैकग्राउंड देकर और जैसे चित्रा जी ने जिस तरह से सिलसिलेवार तरीके से पॉइंट्स को रेज किए हैं तो उस तरह, से लेकर बात करने में शायद आसानी होगी. और दूसरे के ऊपर इमीडियेटली बहुत ज्यादा बोझ ना डालकर उनको एक तरह, से, एक मौका दिया जाएगा कि खुले दिमाग से वह जो काम कर रहा है और उसके हिसाब से इस किस्म का इनपुट के हिसाब से क्या फीडबैक उनकी तरफ से आते हैं, और वह कैसे सोचते हैं, या किस किस मुद्दे आएंगे. यह लेना हमारा ख्याल से इन द. फर्स्ट फेस दैट इज, द बेस्ट, वे टू गो एड. यह. हमारा विचार बाकी चीजों के ऊपर शुरू, से हम लोग अगर पूरा, चीज, हम लोग डिटेल में कैसे कैसे सोच रहे हैं, अलग, अलग, दृष्टिकोण से यह बताकर, हम अगर उनसे कहे कि यह सब आप पढ़ लीजिए और फिर आपका रिएक्शन दीजिए. यह डिस्कशन को थोड़ा सा हो जाएगा, उसका कितना फायदा होगा, कितना यह कार्य कर होगा. यह मुझे समझ में नहीं आ रहा है. यह हमारा इंप्रेशन है हमें उस हिसाब से चित्रा जी का जो, लेख है तुम्हारा, जिस तरह से तुमने शुरू किया हो उसी चीज को ताकि एक बैकग्राउंड रहे जेनरली. किस किस्म का चीजों पर हम लोगों को कैसे काम किए हैं कैसे हम. लोगों को रिस्पांस मिला है और किन किन चीजों पर संवाद की जरूरत है. इस चीज को हम लोग आगे बढ़ाएं और लोगों का रिएक्शन मांगे. और फिर उसके आधार पर वह भी कुछ सजेस्ट कर सकते हैं. मीटिंग. ऑनलाइन

Girish Sahasrabudhe:

Okay. Thank, You. सुनील?

Sunil Sahasrabudhey:

हम इस बात से सहमत हैं. कि एक बार, यह पुलिंदा.. क्लस्टर ऑफ राइटिंग रेडी It may not take too long, from now. उसके पेट्री नोट के साथ में Invitation letter एंड समवन talks to the person यह तो प्रोसेस हमको ठीक लगता है. इसके ऊपर हम, यह ना कहें कि हम लोग जो नोट तैयार करके उन्हें, भेजेंगे उसके, ऊपर, उनका रिएक्शन या रिस्पांस, या इस टाइप की शब्दावली में नॉट बी हम यह कहें कि इसको आप देख लें, और आप भी कुछ एक दो पेज लिखकर भेजे. तो, हम लोग को आइडिया आ जाए. वैसे तो हम लोग जानते हैं कुछ लिखना होगा कि वो दो पेज, चार पेज कुछ लिखकर भेजें सकते हैं, नहीं भेज सकते So it Is It is left once we make a request and after, that we live it at that और यह प्रक्रिया चले अगर यह प्रक्रिया एक डेढ़ महीने में शुरू हो जाती है हमें पता नहीं कितने दिन में शायद एक महीने में शुरू हो जा सकती है. तो यह तीन चार महीने यह प्रक्रिया चले एक हाथ वर्चुअल मीटिंग भी हो जाए इसमें. And we may, plan for an actual मीटिंग इन अक्टूबर और नवंबर इन वाराणसी यह हो सकता है कि उस वक्त ही दूसरी बहुजन स्वराज पंचायत की जाए. एक साल बाद तो वह लोग जब आएंगे तो विचार समिति की बैठक हो और उसी वक्त वह दो तीन दिन का समय मांगा जाए. यह बहुजन स्वराज पंचायत का भी पंचायत भी लगे. बने यह प्लानिंग हो सकता है If we यह लोग लक्ष्मण प्रसाद, हैं चित्रा, जी, है और लोग यहां इसके बारे में सोच कर के ज्यादा ज़्यादा Clearly बता सकते हैं कि हम दूसरी बहुजन समाज पंचायत अगर अगले अक्टूबर नवंबर में करेंगे. तो हम उसमें मतलब दूसरी करेंगे. तो दूसरी दिखाई देनी चाहिए. हम पहले जो बात कही है उन्हीं को रिपीट करते रहेंगे. तो ऐसा. लेकिन ऐसा कुछ उसके ऊपर सोच करके क्या ख्यान का के ऊपर पूरा दिन दिया जा सकता है. बहुजन नैरेटिव के ऊपर फुल डे उस हिसाब से उसको डिजाइन करेंगे. अगर तो शायद एक अगला कदम बन सकता है. स्वराज पंचायत और उसी वक्त विचार समिति की बैठक भी कर लिया. और लोग भी आ जाए. ऐसा कुछ हो, सकता है बाकी तो ठीक ही है, जो प्रक्रिया अडॉप्ट हो रही है. उसे हम सहमत It will work… It should…

Girish Sahasrabudhe:

ठीक है, तो यह इस पर कुछ काम शुरू कर दिया जाए. लेख, और

Krishna Gandhi:

एक चीज मुझे कुछ कहना है... वो ये था कि पिछली बार भी हम लोगों ने सोचा था कि रीजनल लैंग्वेज में आर्टिकल्स को ट्रांसलेट करके या ओरिजिनल आर्टिकल भी हो सकता है तो, इस संकलन में केवल हिंदी और अंग्रेजी न होकर के कुछ रीजनल लैंग्वेज में ट्रांसलेशन किया ओरिजनल. आर्टिकल जोड़े जा सकते हैं. क्या तो और भी अच्छा होगा...

Girish Sahasrabudhe:

हाँ यह बात... तो मैं एक्चुअली करना चाहता था उसमें. इसीलिए सारे आर्टिकल अंग्रेजी और हिंदी में अब है. मेरे ख्याल से सारे नहीं होंगे. एक दो अंग्रेजी में नहीं होंगे, लेकिन जितने अंग्रेजी में है, वो सारे हिंदी में भी हैं. लेकिन वह बेअर ट्रांसलेशन है वो मैंने जेमिनी से किया हुआ है... और जिन्होंने ओरिजिनल अंग्रेजी लिखी है उनको वह देखना होगा और मतलब वह ट्रांसलेशन के तौर पर तो देखा जा सकता है लेकिन, वैसे अदर वाइज भी देखना होगा. तो यह जिम्मेदारी लोग लें. मैंने अपना जो आर्टिकल है वह हिंदी और मराठी दोनों में किया हुआ है. तो अभी मैंने वह दोनों देखे नहीं है. हिंदी और मराठी. एक अनुभव, यह है, जो मैंने पिछले बार कहा था, कि अंग्रेजी से हिंदी और अंग्रेजी से मराठी ये काफी ठीक हो जाते हैं. हिंदी से अंग्रेजी जरा मुश्किल दिखता है, लेकिन यह गलत भी हो सकता है. यह मेरा इंप्रेशन, था. अब इसके क्या कारण हैं नहीं हैं, यह भी मैं जानता नहीं, लेकिन ऐसा मेरा इंप्रेशन था कि यह होता है. तो हिंदी के अंग्रेजी किये हुए तो ठीक से देखना ही होगा. लेकिन यह आप जो कह रहे हैं, यह बहुत जरूरी है. यह अगर हम लोग करते हैं इसके साथ में, तो अलग अलग लैंग्वेज में कुछ एक्टिविटी शुरू करने का काम - जो हमने तय किया है तीन साल के प्रोग्राम में... जो हम लोगों ने जिस पर बातचीत की - उसमें कुछ आगे बढ सकेंगे हम लोग रियल टर्म्स में. अगर यह हम कर लेते हैं, तो इसके आधार पर सीधा बहुजन इनिशिएटिव को लेकर के बातचीत शुरू करना भी संभव हो पाएगा बहुजन स्वराज, बहुजन इनिशिएटिव, बहुजन शब्द को लेकर इसमें बढ़ना शायद संभव हो पाएगा. तो यह तो हमको करना ही चाहिए. यह बिल्कुल सही बात है. लेकिन इसमें शर्त यही है कि वह आर्टिकल मतलब, जिन्होंने लिखे हैं, वह अपनी अपनी लैंग्वेज का ट्रांसलेशन चेक करें उसको और अपनी लैंग्वेज में लिखा है तो उसका अंग्रेजी में ट्रांसलेशन चेक करें क्योंकि अंग्रेजी, से हिंदी और बाकी करना कुछ आसान होता है. मुझे मालूम नहीं, कि जैसे मलयालम से अंग्रेजी, कितना अच्छा होता है, आपको देखना होगा. और हिंदी और अंग्रेजी से मलयालम. भी आपको देखना होगा. So अपने अपने इसके लोग देखें अगर... इसमें तो बहुत ज्यादा समय नहीं लगता. एक लेख देखना है, तो एक दो घंटे में काम हो जाता है कि ठीक है कि नहीं... अच्छा खासा लेख हो चार पांच पन्ने का तो भी. तो यह तो करना बहुत जरूरी है. यह होना चाहिए और यह इस कलेक्शन में तो बिल्कुल होना ही चाहिए. हम लोग जब लोगों को भेजेंगे, तो कम से कम दो लैंग्वेज का उनके पास में ऑप्शन हो तो बहुत ही अच्छा होगा बहुत अच्छा होगा कि मराठी का भी ऑप्शन है अंग्रेजी, का भी है या हिंदी, है और अंग्रेजी भी है, तमिल है अंग्रेजी है, कन्नड़ है... ये दो लैंग्वेज का ऑप्शन है तो बहुत अच्छी बात होगी. यह करना चाहिए बिल्कुल.

तो, मैं यह कह रहा था कि इस दिशा में मेरे ख्याल से तो सभी काफी सहमति दिखती है इस पर कि यह कलेक्शन बने और इसको अच्छा बनाया जाए. इसके साथ में जो लिखने की जरूरत है उसको देखना होगा. मैं उसमें कोशिश करूंगा जो होता है, मुझसे नहीं होता, तो मदद लूंगा लोगों से... वो होगा... सबको साथ जोड़ने वाला एक लेख हो. लेकिन इसकी जो चौडाई है, जो breadth है वह बहुत जरूरी है. जैसे ऐसा मैं मानता हूं... मतलब... जैसे अभिजीत कह रहे थे कि विद्या आश्रम जो कर रहा है और सोच रहा है वो इसमें होना चाहिए... यह तो होना ही चाहिए लेकिन हमारे डिबेट में जो मुद्दे आते हैं उभर के और जिन पर हम लोग जानते हैं कि सोच में कमी है... या काफी जगह है इसको बढाने की... वह चीजें खुलकर सामने आयें और जिनको... हम विचार समिति के जिन लोगों से हम बात कर रहे हैं, जिनके साथ में... उनके सामने यह साफ हो कि यह खुला हुआ है चर्चा के लिए, यह बहुत जरूरी है. सभी किस्म के लेख हों इसमें यह तो आवश्यक है, और यह इसको बढाएगा... इसके पीछे हम लोग लगते हैं. मेरे ख्याल से मई अंत या जून पहले हफ्ते तक बाकी के लेख आकर इस फॉर्मेट में हो जाते हैं कि ये लोगों को भेजे जा सकते हैं दो कम से कम दो या तीन लैंग्वेज में और इसके साथ में, हम लोग जिन लोगों के बारे में सोचे हैं, जिनके... सूची में जिनके नाम हैं उनसे बात करने की जिम्मेदारी हम लोग लें किससे कौन बात करेगा, यह अपने आप आ जाएगा... इसमें कोई बहुत जिम्मेदारी देने वाली बात नहीं है, क्योंकि लोगों के नाम लोगों ने सजेस्ट किए हैं. तो वो

अपनी अपनी जिम्मेदारी लें. इस दिशा में हम लोग इस महीने के अंत तक, जून के पहले हफ्ते तक बढें... इस प्लान से बढें और अगली मीटिंग में इसका एक जायजा लिया जाए कि कहां तक आया है... बीच में यह काम चलता रहे Whatsapp पे एक्सचेंज होता ही रहेगा... मेल पर भी, शायद और इसमें सुरेश का लेख भी शायद अंत तक तो आ ही जाएगा... मई के अंत तक जैसा सुरेश ने कहा इनका भी आ जाएगा... लक्ष्मण प्रसाद का भी आ ही जाएगा, और नरेश का भी आ जाएगा. नरेश कुछ बाद में बिजी है, तो वह जल्दी भेजें. उनको... मैं फिर से बात करूंगा उनसे. And सुरेश कैन वी रिक्वेस्ट जीएसआरके to pen समथिंग आफ्टर से two weeks, or three weeks आफ्टर दैट think we expect him to be in a position to do that.

jksuresh:

I will, speak to him

Girish Sahasrabudhe:

Yeah

jksuresh:

मीटिंग मंडे And slowly, I will see how to sort of राइट हो सकता है